NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

बहुपक्षवाद के लिए एक प्रारंभ: परमाणु प्रसार हेतु आवश्यक वैश्विक संधि

बहुपक्षवाद के लिए एक प्रारंभ: परमाणु प्रसार हेतु आवश्यक वैश्विक संधि

संदर्भ

- संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस के बीच न्यू स्ट्रैटेजिक आर्म्स रिडक्शन संधि (New START) की समाप्ति के साथ परमाणु सुरक्षा को लेकर वैश्विक चिंता तीव्र हो गई है। आशंका है कि विश्व एक नए और अनियंत्रित परमाणु हथियार प्रतिस्पर्धा की ओर बढ़ रहा है।

बढ़ते वैश्विक खतरे की धारणाएँ

- **सुरक्षा परिदृश्य में परिवर्तन:**
  - हाल के वर्षों में भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के तीव्र होने और शीत युद्धोत्तर सुरक्षा व्यवस्था के क्षरण के कारण वैश्विक खतरे की धारणाएँ उल्लेखनीय रूप से बढ़ी हैं।
  - इसने अविश्वास को बढ़ाया, सैन्य आधुनिकीकरण को तीव्र किया और दीर्घकालिक हथियार-नियंत्रण मानदंडों को कमजोर किया।
- **शक्ति राजनीति की वापसी:**
  - पुनः अधिग्रहणवाद, नव-औपनिवेशिक महत्वाकांक्षाएँ और आक्रामक राष्ट्रवाद पुनः राज्य व्यवहार को आकार दे रहे हैं।
  - सैन्य शक्ति का उपयोग बढ़ते हुए दबाव के साधन के रूप में किया जा रहा है, जबकि कूटनीतिक तंत्र इसकी गति से सामंजस्यशील नहीं हैं।
  - महाशक्ति प्रतिद्वंद्विता के पुनरुत्थान ने प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों प्रकार के संघर्षों की संभावना को कई क्षेत्रों में बढ़ा दिया है।
- **परमाणु जोखिम और सामरिक अस्थिरता:**
  - परमाणु हथियार नियंत्रण समझौतों के क्षरण ने अस्तित्वगत खतरे की धारणाओं को उल्लेखनीय रूप से बढ़ा दिया है।
  - अमेरिका, रूस, चीन, इज़राइल और पाकिस्तान जैसे परमाणु-सशस्त्र राज्य अपने शस्त्रागार का विस्तार एवं उन्नयन कर रहे हैं, जबकि प्रमुख संधियाँ समाप्त हो रही हैं और कोई विश्वसनीय विकल्प उपस्थित नहीं है।
  - इससे पारदर्शिता कम हुई है, विश्वास-निर्माण उपाय कमजोर हुए हैं और गलत आकलन का जोखिम बढ़ा है।
- **क्षेत्रीय असुरक्षा हॉटस्पॉट्स:**
  - **पश्चिम एशिया:** बदलते गठबंधन और गुप्त परमाणु महत्वाकांक्षाएँ अस्थिरता बढ़ाती हैं।
  - **पूर्वी यूरोप:** युद्ध, क्षेत्रीय विवाद और सैन्य वृद्धि से प्रभावित।
  - **पूर्वी एशिया:** सामरिक प्रतिस्पर्धा और हथियार निर्माण से निवारक गतिशीलता पुनर्परिभाषित हो रही है।

न्यू START संधि

- स्ट्रैटेजिक आर्म्स रिडक्शन संधि-I (START-I) अमेरिका और पूर्व सोवियत संघ के बीच 1991 में हस्ताक्षरित हुई तथा 1994 में लागू हुई।
  - इसने प्रत्येक पक्ष को 6,000 परमाणु वारहेड और 1,600 अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइलों (ICBMs) तक सीमित किया, लेकिन 2009 में समाप्त हो गई।

- इसके बाद स्ट्रैटेजिक ऑफेंसिव रिडक्शंस संधि (SORT, जिसे मॉस्को संधि भी कहा जाता है) लागू हुई।
  - बाद में न्यू START संधि 2010 में हस्ताक्षरित हुई और 2011 में लागू हुई।
- न्यू START संधि ने प्रत्येक पक्ष के लिए तैनात सामरिक वारहेड की संख्या 1,550 तक सीमित की, जिसमें 700 से अधिक तैनात जमीनी या पनडुब्बी-प्रक्षेपित मिसाइलें एवं बमवर्षक विमान नहीं हो सकते, तथा कुल 800 प्रक्षेपक।

न्यू START की समाप्ति का प्रभाव

- इसकी समाप्ति ने विश्व के दो सबसे बड़े परमाणु शस्त्रागारों पर अंतिम द्विपक्षीय प्रतिबंध को हटा दिया है, जो मिलकर वैश्विक परमाणु हथियारों का लगभग 90% हिस्सा रखते हैं।
- दोनों देश अब आक्रामक परमाणु आधुनिकीकरण कार्यक्रम चला रहे हैं, जिससे तैनात वारहेड की तीव्र वृद्धि की संभावना बढ़ गई है।

विस्तृत होता परमाणु परिदृश्य

- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) के अनुसार जनवरी 2025 तक नौ परमाणु-सशस्त्र राज्यों के पास कुल 12,241 वारहेड हैं, जिनमें से 9,614 सैन्य भंडार में हैं।
- अमेरिका एवं रूस के अतिरिक्त, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन, भारत, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया और इज़राइल ने अपने शस्त्रागार का विस्तार या उन्नयन किया है।
- भारत लगभग 180 वारहेड के साथ पाकिस्तान से आगे निकल गया है।
- चीन, जिसके पास लगभग 600 वारहेड हैं, सबसे तीव्र से बढ़ता हुआ शस्त्रागार रखता है और सैकड़ों मिसाइल साइलो का निर्माण कर रहा है। अनुमान है कि दशक के अंत तक इसकी अंतरमहाद्वीपीय क्षमताएँ अमेरिका एवं रूस के बराबर पहुँच सकती हैं।
  - कोई भी भविष्य का हथियार-नियंत्रण ढाँचा यदि चीन को बाहर रखता है तो वह अप्रभावी सिद्ध होगा।

निरस्त्रीकरण हेतु बहुपक्षीय तंत्र की आवश्यकता

- **परमाणु अप्रसार संधि (NPT):** यह अभी भी अपने 191 सदस्य राज्यों को कानूनी रूप से परमाणु निरस्त्रीकरण का अनुसरण करने के लिए बाध्य करती है, जबकि न्यू START समाप्त हो चुकी है।
  - अप्रैल–मई में निर्धारित NPT समीक्षा सम्मेलन पुनः प्रतिबद्धता के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।
  - पश्चिम एशिया, पूर्वी यूरोप और पूर्वी एशिया में परमाणु क्षमताओं में बढ़ती रुचि हथियार नियंत्रण हेतु बहुपक्षीय दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करती है।
- **परमाणु हथियार और पूर्ण निवारण का मिथक:** परमाणु हथियारों का स्वामित्व संघर्ष को समाप्त नहीं करता। भारत और पाकिस्तान के बीच निम्न-तीव्रता वाले संघर्ष परमाणु निवारण के बावजूद जारी रहते हैं।
  - परमाणु हथियार विनाशकारी वृद्धि का स्थायी जोखिम जोड़ते हैं, विशेषकर अतिराष्ट्रवादी नेतृत्व के अंतर्गत जहाँ संकट निर्णय-प्रक्रिया अप्रत्याशित हो सकती है।
- **परमाणु हथियार निषेध संधि (TPNW), 2017 की भूमिका:** यह एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय समझौता है जो व्यापक रूप से परमाणु हथियारों पर प्रतिबंध लगाता है।

- यह एक नैतिक और कानूनी ढाँचा प्रदान करता है जो व्यापक निरस्त्रीकरण प्रयासों का समर्थन कर सकता है।
- यद्यपि लगभग 100 देशों ने इस पर हस्ताक्षर किए हैं और 70 ने अनुमोदन किया है, किंतु कोई भी परमाणु-सशस्त्र राज्य इसमें शामिल नहीं हुआ है।

अन्य सुझाए गए उपाय

- **द्विध्रुवीय ढाँचे से परे हथियार नियंत्रण का विस्तार:** अमेरिका–रूस केंद्रित दृष्टिकोण से आगे बढ़ते हुए चीन को औपचारिक रूप से शामिल किया जाए और अन्य परमाणु-सशस्त्र राज्यों को क्रमिक रूप से एकीकृत किया जाए।
- **स्तरीकृत या चरणबद्ध दृष्टिकोण अपनाना:** प्रमुख परमाणु शक्तियाँ नेतृत्व करें, उसके बाद क्षेत्रीय परमाणु राज्य शामिल हों।
- **असमान शस्त्रागार की मान्यता:** एक समान सीमा के बजाय विभेदित दायित्वों की अनुमति दी जाए।
- **'जोखिम-न्यूनकरण प्रथम' रणनीति अपनाना:** वर्तमान अविश्वास को देखते हुए तत्काल निरस्त्रीकरण अवास्तविक है।
  - संकट स्थिरता उपायों को प्राथमिकता दी जाए, जैसे परमाणु बलों को डी-अलर्ट करना, नो-फर्स्ट-यूज़ (NFU) प्रतिबद्धताएँ, स्पष्ट परमाणु सिद्धांत और रेड-लाइन संचार।
  - प्रतिद्वंद्वी गुटों (जैसे NATO–रूस, अमेरिका–चीन, भारत–पाकिस्तान) के बीच परमाणु जोखिम-न्यूनकरण केंद्र स्थापित किए जाएँ।
- **प्रौद्योगिकी के माध्यम से सत्यापन को सुदृढ़ करना:** पारदर्शिता बढ़ाने हेतु एआई-सहायता प्राप्त निगरानी, उपग्रह चित्र और रिमोट सेंसिंग का उपयोग किया जाए।
  - संयुक्त राष्ट्र या IAEA के पर्यवेक्षण में एक बहुपक्षीय सत्यापन निकाय बनाया जाए।
  - संप्रभुता संबंधी चिंताओं और विश्वसनीयता के बीच संतुलन हेतु मैनेज्ड एक्सेस इंस्पेक्शन की अनुमति दी जाए।
- **क्षेत्रीय सुरक्षा ढाँचों से परमाणु हथियार नियंत्रण को जोड़ना:** क्षेत्रीय खतरे की धारणाओं को संबोधित किया जाए, जो प्रायः परमाणु विस्तार को प्रेरित करती हैं।
  - **पूर्वी एशिया:** हथियार नियंत्रण को ताइवान और कोरियाई प्रायद्वीप की स्थिरता से जोड़ा जाए।
  - **दक्षिण एशिया:** विश्वास-निर्माण को पारंपरिक बलों की संयम नीति के साथ एकीकृत किया जाए।
  - **पश्चिम एशिया:** WMD-मुक्त क्षेत्र पर चर्चा को पुनर्जीवित किया जाए।
- **उभरती प्रौद्योगिकियों को स्पष्ट रूप से संबोधित करना:** भविष्य के समझौतों में हाइपरसोनिक हथियार, साइबर हस्तक्षेप, एआई-सक्षम कमांड सिस्टम और अंतरिक्ष परिसंपत्तियों को शामिल किया जाए।
  - परमाणु और पारंपरिक प्रणालियों के उलझाव को रोका जाए, जो आकस्मिक वृद्धि का कारण बन सकते हैं।
  - परमाणु कमांड-एंड-कंट्रोल प्रणालियों पर साइबर हमलों के विरुद्ध मानदंड स्थापित किए जाएँ।
- **हथियार नियंत्रण संस्थानों का अपराजनीतिकरण:** हथियार नियंत्रण वार्ताओं को दैनिक भू-राजनीतिक संकटों से अलग किया जाए।
  - वैज्ञानिकों, पूर्व अधिकारियों और सामरिक विशेषज्ञों को शामिल करते हुए ट्रैक II औएवं र ट्रैक 1.5 कूटनीति का उपयोग किया जाए।
  - हथियार नियंत्रण को तकनीकी सुरक्षा अभ्यास के रूप में पुनः स्थापित किया जाए, न कि सौदेबाजी के साधन के रूप में।

- **सामरिक विश्वास को क्रमिक रूप से पुनर्निर्मित करना:** भव्य संधियों के बजाय विनम्र, सत्यापन योग्य कदमों से शुरुआत की जाए।
  - न्यू START जैसी पूर्व संधियों से पारदर्शिता और डेटा-आदान-प्रदान तंत्र को विस्तारित या पुनः लागू किया जाए।
  - परमाणु शक्तियों के बीच नियमित उच्च-स्तरीय संवाद संस्थागत किया जाए, न कि केवल संकट-प्रेरित।

निष्कर्ष: एक नई शुरुआत का क्षण

- न्यू स्टार्ट (New START) की अवधि की समाप्ति वैश्विक परमाणु संयम का स्मरण कराती है।
- अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के पास यह अवसर है कि वह एक नए हथियारों की प्रतिस्पर्धा में फिसलने के बजाय समावेशी और बहुपक्षीय निरस्त्रीकरण वार्ताओं को आगे बढ़ाए।
- एक वास्तविक "नई शुरुआत" के लिए प्रमुख परमाणु शक्तियों की ओर से नेतृत्व और निरंतर वैश्विक दबाव आवश्यक होगा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि परमाणु हथियार अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के भविष्य को परिभाषित करते न रहें।

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: परमाणु प्रसार और निरस्त्रीकरण पर एक बहुपक्षीय वैश्विक संधि की आवश्यकता की जांच कीजिए। वर्तमान भू-राजनीतिक परिवेश में बहुपक्षीय परमाणु हथियार नियंत्रण को प्रभावी बनाने हेतु उपाय सुझाइए।

Source: BS